डा0 रागिनी श्रीवास्तव

एसोशिएट प्रोफेसर, प्राचीन इतिहास विभाग

हरिश्चन्द्र स्नातकोत्तर महाविद्यालय

वाराणसी

बी0ए0 द्वितीय वर्ष

प्रश्न पत्र–I : ' भारत का राजनैतिक इतिहास

(550 ई0 से 1200 ई0 तक)

परवर्त्ती गुप्त

स्त्रोत : अभिलेख –अफसढ़, शाहपुर, मंदार पर्वत, मंगराव, देववरर्णाक, वैधनाथधाम, दूध पानी, कौलेश्वरी।

ग्रन्थ – हर्षचरित, गौडवहो, आर्यमंजूश्रीमूलकल्प , राजतरंगिणी।

काल – 480 ई0 से 731 ई0 तक

जाति – इस सम्बन्ध में विद्धानों में मतभेद है किन्तु उपलब्ध साक्ष्यों के आधार पर इन्हें क्षत्रिय माना जाता है।

मूल्य स्थान – इस सम्बन्ध में भी विद्धानों में मतभेद है किन्तु उपलब्ध साक्ष्यों के आधार पर इन्हें मगध का मूल्य निवासी माना जा सकता है।

वंशावली

अफसढ़ एवं देववरर्णाक अभिलेख के आधार पर मिलने वाले राजाओं के नाम इस प्रकार है:

1. कृष्ण गुप्त	2. हर्ष गुप्त	3. जीवित गुप्त
4. कुमार गुप्त	5. दामोदरगुप्त	6. महासेन गुप्त
7. माधव गुप्त	8. आदित्ससेन	
9. देवगुप्त	10. विष्णुगुप्त	11. जीवित गुप्त–द्वितीय

1.कृष्ण गुप्त –

- शासनकाल 480 ई0 से 500 ई0
- संस्थापक शासक था।
- उच्चकुल से सम्बन्ध था
- सेना में अगणित हाथी थे।
- विद्वान पुरूषों से घिरा रहता था।
- असंख्य शत्रुओं पर विजय की।
- शत्रुओं की पहचान मौखरि नरेश हरिवर्मा से की गयी है किन्तु यह मत सही नहीं है।
- मालवा नरेश यशोधर्मा की शत्रुरूप में पहचान भी संदिग्ध है।
- नृप उपाधि सामन्त स्तरीय शासक बताती है।
- पुत्री हर्ष गुप्ता का विवाह मौखरि नरेश हरिवर्मा के पुत्र आदित्य वर्मा से किया।
- गुप्त शासक बुद्धगुप्त के अधीन सामन्त शासक था।

2. हर्ष गुप्त –

- शासन काल 500 ई0 से 525 ई0
- कृष्ण गुप्त का पुत्र था।
- देवश्री की उपाधि धारण की।
- सामन्त स्तर का शासक था
- गुप्त नरेश नरसिंह गुप्त बालादित्य का सामन्त था।
- पराक्रमी एवं विजेता था।
- पराजित शत्रु संभवतः हूण थे।
- समकालीन मौखरि नरेश आदित्य वर्मा था।
- मौखरियों से मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध थे।

3. जीवित गुप्त प्रथम –

- शासन काल 525 ई0 से 540 ई0
- हर्ष गुप्त का पुत्र एवं उत्तराधिकारी था
- अफसढ़ लेख में क्षितीश चूड़ामणि की उपाधि दी गयी है।
- समुद्र तटवर्ती हरित प्रदेश तथा हिमालय के शीत प्रदेश के शत्रुओं के लिए 'दाह ज्वर' सदृश कहा गया है।
- समुद्रतटीय शत्रु संभवतः गौड़ थे।
- हिमालय के सीमावर्ती शत्रु लिच्छवि थे।
- समकालीन मौखरि नरेश ईश्वर वर्मा था।
- गुप्त शासक विष्णु गुप्त का सामन्त शासक था।

4. कुमारगुप्त –

- शासन काल 540 ई0 से 560 ई0
- महाराणाधिराज की उपाधि धारण की जो स्वतन्त्र सत्ता की सूचक है।
- गौड़ों को पराजित किया।
- मौखरि नरेश ईशान वर्मा से संघर्ष।
- अफसढ़ लेख के अनुसार ईशान वर्मा की सेना को मंदराचल की भांति मथ डाला था।
- उल्लेख के आधार पर ईशानवर्मा की पराजय सुनिश्चित होती है।
- प्रयाग में आत्मदाह का उल्लेख मिलता है।
- आत्मदाह के कारण से सम्बन्धित विद्धानों के भिन्न भिन्न मत।
- स्वर्ग की प्राप्ति के लिए प्रयाग में जाकर प्राणोत्सर्ग की परम्परा का मत उचित।
- मगध सहित प्रयाग तक का पूर्वी भाग परवर्ती गुप्त के अधिकार में आ गया।

5. **दामोदर गुप्त** –

- शासन काल 560 से 565 ई0
- समकालीन मौखरि नरेश सर्ववर्मा था।
- सर्ववर्मा से संघर्ष
- अफसढ़ अभिलेख के अनुसार 'मौखरि नरेश की सेना के मदमस्त चाल वाले हाथियों की घटा को विघटित कर दिया। यह मूर्छित था, किन्तु पतितुल्य स्वीकार करने वाली सुखधुओं के स्पर्श से पुनः जीवित हो गया।
- युद्ध में पराजित हुआ, मारा गया अथवा मूर्छित हुआ।
- मगध पर मौखरियों का अधिकार हो गया।
- परवर्ती गुप्तों का राज्य केवल मालवा तथा उसके आस–पास ही सीमित रहा।
- ब्राह्मण धर्म का पोषक तथा उदार शासक था।
- अनेक ब्राह्मण कन्याओं का विवाह करवाया।
- एक सौ ग्राम (अग्रहार) ब्राह्मणों को दान में दिया था।

6. **महासेन गुप्त** –

- शासनक काल 565 ई0 से 595 ई0 तक ।
- बहन महासेन गुप्ता का विवाह पुष्यभूति नरेश आदित्यवर्धन के साथ करके अपने राज्य की पश्चिमी सीमा के सुरक्षित किया।
- कामरूप शासक सुस्थित वर्मा को लौहित्य नदी के तट पर पराजित किया।
- चालुक्य नरेश कीर्तिवर्मा द्वारा पराजित हुआ।
- तिब्बती शासक स्टोम्बतसेन ने मध्य भारत के विरूद्व अभियान करके इसे पराजित किया।

- अवनिवर्मा (मौखरि नरेश) और कामरूप को शासक सुस्थितवर्मा के सम्मिलित आक्रमण के परिणामस्वरूप पराजित हुआ तथा मगध से अधिकार समाप्त हो गया।
- मालवा में राज्य कर रहा था किन्तु वल्लभी के शासक शिलादित्य प्रथम, कलचुरि शंकरगण तथा देवगुप्त ने एक साथ उसके विरूद्व संघर्ष छेड़ दिया जिसमें अपने मित्र व सम्बन्धी प्रभाकरवर्धन की सहायता प्राप्त महासेन गुप्त पराजित हुआ और मारा गया।

7. माधव गुप्त

- महासेन गुप्त का पुत्र था।
- महासेन गुप्त के बाद लगभग 50 वर्षों तक परवर्त्ती गुप्तों का मगध से अधिकार समाप्त हो गया था।
- माधव गुप्त तथा भाई कुमार गुप्त का पालन पोषण थानेश्वर राज्य में राजवर्धन तथा हर्षवर्धन के साथ हुआ।
- हर्ष चरित में हर्ष द्वारा कुमार के अभिषेक का उल्लेख मिलता है।
- 641 ई0 में हर्ष को चीनी स्त्रोत 'मगध का राजा' कहते हैं। अतः इसके पहले ही माधव गुप्त मगध का अधिकार प्राप्त कर चुका होगा।
- 647 ई0 में हर्ष के जीवनकाल तक उसके अधीनस्थ शासक रूप में राज्य करता रहा।
- अफसढ़ लेख में उसे राजाओं में सिरमौर, युद्व में अग्रगण्य, सज्जनता का धाम, धर्म दृढ़सेतु, मित्रों को सुख प्रदान करने वाला तथा शत्रुओं का विनाश करने वाला कहा गया है।
- उल्लिखित शत्रुओं से आशय उनसे है जो युद्व हर्ष के नेतृत्व में लड़े गये अथवा वह जो हर्ष के बाद स्वतन्त्रता घोषित करने पर विद्रोही हो गये।
- इनमें कामरूप नरेश भास्कर वर्मा भी था।
- 650 ई0 में मृत्यु हो गयी।

8. **आदित्य सेन** –

- इसका शासनकाल 650 ई0 से 675 ई0 तक ।
- शासनकाल के प्राम्भिक दिन कठिनाई पूर्ण थे। अतः क्षितीशचूड़ामणि, नृप, परमभट्टारक जैसी अधिनस्थ शासक की उपाधियां धारण की।
- बैद्यनाथ धाम लेख में इसे समुद्रपर्यन्त पृथवी का शासक, चोल देश विजेता, तीन अश्वमेध यज्ञों का अनुष्ठानकर्त्ता कहा गया है।
- शाहपुर तथा भागलपुल से प्राप्त अभिलेखों से ज्ञात होता है कि मगध तथा अंग इसके साम्राज्य में सम्मिलित थे।
- बिहार के हजारी बाग जिले से प्राप्त दूध–पानी अभिलेख के आधार पर इसका राज्य दक्षिण में छोटा नागपुर पहाड़ी तक प्रसारित माना जाता है।
- इसके द्वारा गोमती नदी तक मगध राज्य का विस्तार किया गया।
- स्पष्ट रूप से आदित्य सेन एक विशाल साम्राज्य का स्वामी था। इसके समय में परवर्त्ती गुप्त साम्राज्य विस्तार की पराकाष्ठा पर था।
- शाहपुर लेख, मंदार पर्वत लेख तथा मंगराव लेख इसके समय में किए गए निर्माण कार्यों एवं दानों का उल्लेख करते हैं।
- मौखरियों से पुनः मैत्री सम्बन्ध स्थापित किया। अपनी पुत्री का विवाह मौखरि भोगवर्मा से किया।
- इसके लिए परम भागवत की उपाधि प्रयुक्त की गयी है। विष्णु नृसिंहरूपी प्रतिमा की स्थापना की।
- सेनापति शालपक्ष ने सूर्यदेव की प्रतिमा का निर्माण करवाया।
- बौद्ध मन्दिर का निर्माण करवाया।

9. **देव गुप्त** –

- इसका शासन काल 675 ई0 से 695 ई0 तक था।
- यह आदित्यसेन का पुत्र व उत्तराधिकारी था।
- उसके लिए महाराजाधिराज परमभट्टारक परमेश्वर की उपाधि प्रयुक्त की गयी है।
- बादामी के चालुक्य शासक विनयादित्य द्वारा पराजित हुआ।
- देवगुप्त का शासन पूर्वी भारत तक प्रसारित था।

10. **विष्णु गुप्त** –

- शासन काल 695 ई0 से 715 ई0 तक था।
- देवगुप्त का पुत्र व उत्तराधिकारी था।
- ताम्र अभिलेख भोजपुर जनपद के मंगराव से मिला है।
- यह अभिलेख शासन काल के सत्रहवें वर्ष में प्रकाशित किया गया था।
- अभिलेख में इस महाराजाधिराज की उपाधि दी गयी हैं तथा भगवान समुद्रदेश्वर के निमित्र एक तैलदान का उल्लेख किया गया है।

11. **जीवित द्वितीय** –

- शासनकाल 715 ई0 से 731 ई0 तक
- अन्तिम ज्ञात शासक था।
- प्रकाशित लेख – देव वरर्णाक।
- अभिलेख अग्रहार दान की पुष्टि करता है।
- यशोवर्मा, कान्यकुब्ज नरेश, द्वारा पराजित हुआ तथा मारा गया।

धन्यवाद